जय महामुनि महर्षि श्री गर्गाचार्य ऋषिः आयुर्वेद में वात पित्त कफ को सम रखने के उपाय

आयुर्वेद में वात पित्त कफ़ को सम एव ठीक करने के सरल उपाय है कि जीवन में वात पित्त और कफ के बिगड़ने पर ही रोग आते है

-वात (वायु) शरीर मे सुबह को बढ़ता है
-पित्त (अम्लता) शरीर मे दोपहर को बढ़ता है
-कफ (बलगम) शरीर मे रात को बढ़ता है
-नाभि से लेकर पैरों तक वात् के रोग है
-नाभि से लेकर छाती तक पित्त के रोग है
-छाती से लेकर सिर तक कफ के रोग है

इन तीनो दोषों को सम पर रखने के सरल उपाय, यदि कोई खानपान में थोड़ा सा बदलाव करे तो जीवनपर्यंत निरोगी रह सकता है

वातः-
-तेल शुद्ध खाये,सबसे अच्छा सरसों का है
-दूध, देशी गाय का शुद्ध खाये
-संतरा, मौसमी, गन्ने का जूस ,टमाटर, अंगूर आदि खायें

पित्तः-
-देशी गाय का घी शुद्ध खायें
-छाछ का सेवन करे
-दोपहर को भोजन में अजवाइन जरूर डाले
-अजवाइन नही डालते हो तो भोजन के बाद एक चुटकी अजवाइन काले नमक के साथ खाएं

कफः-
-काले जीरे का प्रयोग करे
-हींग का प्रयोग करे
-धनिया का प्रयोग करें, हरा हो या सूखा

कफः-
-गुड़ खाये
-शहद खाये
-सोंठ खाये
-सौंफ खाये
-पान का पत्तता खाए

आवंला इन तीनो दोषों को अकेला ही ठीक रखता है

देशी गाय का गौमूत्र वात और कफ के रोग एव कुछ आयुर्वेदिक उपाय के साथ पित्त के रोग ,इन तीनों दोषों से होने वाले 148 रोगों को अकेला ही ठीक कर देता है। आपका हर दिन शुभ मंगलमय हो ऐसी कामनाएं।

जय महामुनि महर्षि श्री गर्गाचार्य ऋषि।

– श्रीमती दिव्या रावत गर्ग उण्डू श्री हरि विष्णु कृपा, श्री गर्गवास राजबेरा, राजस्थान।

मारवाड़ी राजस्थानी रंगीली होलीः मारवाड़ी होली फागण गीत

होली के अवसर पर तरह तरह के फागण गीत गाये जाते है देखे बानगी

1. राम मै लिछमण री जोडी कजली वन मे हाली रे
2. हाथ मे जैपरियो लोटो पेमो सुगनिया बोलावे रे, पेमो बारोटियो
3. आडतरै रै आडै गालै करसो किण रो जावै रे, तीखी मौर तोडियो पेमै रो जावै रे, पेमो बारोटियो 7
4. जोरजी चांपावत घोडा बाजारां में खडिया रे
5. वडली आला भेरूं थारै कालो डोरो बांधूं रे
6. कौंकड मे कमावै थारो कालो डील पडियो रे
7. वाङ में वढ बोरडी म्हारी नणदल माथो धोवै रे
8. पाली सूं लखवारो आयो लीली लाखों लायो रे
9. लिगनो रो नारेव थारै पावागढ सूं आयो रे, पाबू परणीजै
10. होली माथा आवरी थारे मादलियो घडावूं रे
11. होळी थारा गेरिया गुजरात ढळग्या रे, वाने मनाओ।
12. नणदल मै भोजा ई दोनो भेलो अटियो ढाल्यो रे
13. मोडा वेगा आवो भंवरजी थारै दूध राखूं प्याला मे
14. फाग मे फरफरिया फूलडा चेतन नैनो आयो रे
15. लूर री ऊमाई मैं तो कडिये कूंची बान्धी रे
16. ऐडा कांई म्हारा जेठजी पडियों नै पालै रे न्यारी हो जा सूं
17. नणदलडी पूछै रे वाभस वरसालो कद आसी रे
18.नणदलडी पूछै रे वाभस मेले में कूण मिलियो रे
19. कानजी पूछै रे मण्डला गोपियों ने दीठी रे
20.गोपियों पूछै रे मण्डला कानजी ने दीठा रे
21. गांव रै गेवाङ विच में डाण्डो रुपियो होली रो
22. चंग रो धमीडा मैं तो महलां सूती सुणियो रे
23. धोरे में धमीडा वाजै गाडो किण रो आवै रे
24. ढोलियो ढाल्योडो पडियो नींद किण ने आवै रे
25. देश में अंग्रेज आयो कांई कांई लायो रे
26. मोरियो मारे नै कंवर ढाल नीचे ढकियो रे
27. सासरिये रो सालू मनै खारो जहर लागै रे, पीवरिये रो पोमचो प्यारो लागै रे
28. हालो रे गैहरियों थानै भंवरजी बुलावै रे
29. दारूङै रो दागो म्हारे सालूङै रै लागो रे
30. खोपरियों रो खोलो भर नै आडै मगरै चाली रे
31. चौथ रो चंद्र रे कोनु मेडी माथे उगो हे
32. साथणियों संग लूर लेती काना पारख कीकर पाडी रे, नाक में सोने री नथडी, पीरख पाडी रे
33. पोतिये रो झालो दे नै टोली मां सूं टाली रे
34. जीव्जा नै मंजीरों रै जोड ले न शिव रे मिन्दर चाली रे
35. पाणी री पगडैण्डी माथै साधुर्डी रो धूणो है
36. पाणी नै जाऊं तो म्हारै हरियो डोरो आटी मे
37.पाणी नै जाऊं तो म्हारै छाण्ट लागै पालर री
38. कान मे अन्तर रो फूम्भो, पोतिये में पनडी रे
39. मोडकी मगरी रो पाणी ढालोढाल ढलियो रे
40. देश में अंग्रेज आयो कांई कांई लायो रे, नाखी फूट भायां में वेगार लायो रे काली टोपी रो।

जय श्री कृष्ण, राधे - राधे, ओम नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमती दिव्या रावत गर्ग उण्डू श्री हरि विष्णु कृपा, श्री गर्गवास राजबेरा, राजस्थान।

साहित्यिक होली मिलन एवं सार्वजनिक नारायण पुस्तकालय का उद्घाटन समारोह और लोकार्पण

रंगोत्सव के पावन सप्ताह में दिनांक 1 मार्च 2026 (रविवार) को दोपहर 1:00 बजे से सायं 6:00 बजे तक ग्राम भुआलपुर में नारायण साहित्य शाला भारत ट्रस्ट (भुआलपुर सीखड़ इकाई) के तत्वावधान में 'साहित्यिक होली मिलन कार्यक्रम' आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में गाँव के अध्ययन शील युवाओं के लिए प्रतियोगी परीक्षा संबंधी समस्याओं, विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए जानकारी और सहयोग देने की व्यवस्था की जा रही है। निष्णात शिक्षकों द्वारा निः शुल्क कोचिंग भी कराई जाएगी। इस कार्यक्रम में समस्त ग्राम वासीयों की गरिमामय उपस्थिति में ग्रामीणांचल में 'नारायण पुस्तकालय ' का उद्घाटन किया जाएगा।इस पुस्तकालय का उद्देश्य केवल साहित्य का विकास ही नहीं, बल्कि शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार भी है। हम प्रार्थना करते हैं कि श्री हरि नारायण 'नर' बनकर आप के रूप में हमें इस महान संकल्प को पूर्ण करने हेतु शक्ति एवं सहयोग प्रदान करें।

प्रधानमंत्री के संबोधन और संसदीय सम्मान ने रेखांकित की भारत–इज़राइल की सुदृढ़ होती रणनीतिक साझेदारी

इज़राइल संसद में गूंजता भारतः वैश्विक शक्ति संतुलन में नई दिशा

जब किसी राष्ट्र के प्रधानमंत्री को किसी अन्य देश की संसद में खड़े होकर सम्मानित किया जाता है, तो वह क्षण केवल कूटनीतिक शिष्टाचार नहीं होता–वह अंतरराष्ट्रीय विश्वास की अभिव्यक्ति होता है। नरेंद्र मोदी का इज़राइल दौरा और ऋद्दह्यह्यद्बह्ल में उनका संबोधन इसी विश्वास की पुष्टि करता है।

प्रधानमंत्री को 'स्पीकर ऑफ द नेसेट' सम्मान से अलंकृत किया जाना इस बात का संकेत है कि भारत की वैश्विक भूमिका को अब नई गंभीरता से देखा जा रहा है। यह सम्मान व्यक्तिगत उपलब्धि से आगे बढ़कर 140 करोड़ भारतीयों की सामूहिक प्रतिष्ठा का प्रतीक बन गया। इज़राइल के प्रधानमंत्री ऋद्दह्यह्यद्बह्ल द्दह्लह्वह्लद्ध4ह्लद्बह्ल द्वारा व्यक्त सम्मानजनक शब्दों ने इस मित्रता की आत्मीयता को और स्पष्ट किया।

भारत और इज़राइल–दोनों प्राचीन सभ्यताएँ–संघर्षों से तपकर आधुनिकता की राह पर अग्रसर राष्ट्र हैं। एक ओर इज़राइल नवाचार, साइबर सुरक्षा, ड्रोन तकनीक और जल प्रबंधन में अग्रणी है; दूसरी ओर भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर बढ़ता हुआ आत्मविश्वासी राष्ट्र है।

यह साझेदारी केवल रक्षा सहयोग तक सीमित नहीं है। कृषि में सूक्ष्म सिंचाई, सेमीकंडक्टर और क्वांटम तकनीक में संभावित सहयोग, तथा

योग और आयुर्वेद के प्रति इज़राइल की बढ़ती रुचि–ये सभी संकेत देते हैं कि संबंध बहुआयामी हैं।

भारत-इज़राइल संबंध अब केवल रक्षा सहयोग तक सीमित नहीं रहे। कृषि क्षेत्र में ड्रिप इरिगेशन और सूक्ष्म सिंचाई तकनीक, जल संरक्षण के उन्नत मॉडल, और रेगिस्तानी क्षेत्रों में उत्पादक खेती की पद्धतियाँ भारत के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

क्वांटम कंप्यूटिंग और सेमीकंडक्टर जैसे उभरते क्षेत्रों में सहयोग की संभावना भविष्य की तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत की स्थिति को मजबूत कर सकती है। बहुपक्षीय स्तर पर द्ब22 तह्लश्वह्लक्ष जैसे मंचों के माध्यम से खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा और तकनीकी निवेश के नए अवसर भी खुल रहे हैं।

आतंकवाद के मुद्दे पर प्रधानमंत्री का स्पष्ट संदेश– 'दोहरा रवैया स्वीकार्य नहीं '–वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत और इज़राइल दोनों इस चुनौती का सामना कर चुके हैं। ऐसे में साझा 'जीरो टॉलरेंस' नीति केवल रणनीतिक आवश्यकता नहीं, बल्कि नैतिक प्रतिबद्धता भी है।

आज पश्चिम एशिया अस्थिरताओं के दौर से गुजर रहा है। ईरान-अमेरिका तनाव, चीन की भू-राजनीतिक सक्रियता और बदलते वैश्विक गठबंधन नई जटिलताएँ उत्पन्न कर रहे हैं। ऐसे समय में भारत की संतुलित विदेश नीति–जो इज़राइल के साथ साझेदारी सुदृढ़ करती है, परंतु अन्य क्षेत्रीय शक्तियों से संवाद भी बनाए रखती है–परिपक्व कूटनीति का उदाहरण है।

इज़राइल संसद में गूँजती सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ केवल लोकप्रियता का संकेत नहीं थीं; वे इस तथ्य की स्वीकृति थीं कि भारत अब विश्व मंच पर निर्णायक भूमिका निभाने की क्षमता रखता है।

भारत-इज़राइल मित्रता का यह अध्याय बताता है कि 21वीं सदी की कूटनीति केवल शक्ति प्रदर्शन नहीं, बल्कि नवाचार, विश्वास और साझा मूल्यों पर आधारित साझेदारी का नाम है।

और यदि भारत इसी आत्मविश्वास, संतुलन और दूरदर्शिता के साथ आगे बढ़ता रहा, तो निकट भविष्य में वह वैश्विक व्यवस्था के निर्माण में एक प्रमुख स्तंभ के रूप में स्थापित होगा।

राजेश कुमरावत 'सार्थक'
– वरिष्ठ पत्रकार, वैश्विक कूटनीति के विश्लेषक एवं स्तंभकार

'परिवर्तन केवल एक थीम न रहे, इसे एक वैश्विक आंदोलन बनने दें':

श्री भूपेंद्र यादव ने टेरी के विश्व सतत विकास शिखर सम्मेलन के 25वें संस्करण का उद्घाटन किया

नई दिल्ली : द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट (टेरी) के वार्षिक प्रमुख मंच, विश्व सतत विकास शिखर सम्मेलन 2026 के रजत जयंती संस्करण का आज ताज पैलेस में शुभारंभ हुआ। यह आयोजन जलवायु और विकास से जुड़े परिवर्तनकारी कार्यों के एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए दुनिया भर के नेताओं, नीति-निर्माताओं, उद्योग जगत के दिग्गजों, शोधकर्ताओं और नागरिक समाज के प्रतिनिधियों को एक साथ लाता है। 'परिवर्तन 7 ट्रांसफॉर्मेशन्सः सतत विकास के लिए दृष्टि, स्वर और मूल्य' की व्यापक थीम के अंतर्गत आयोजित ह्लद्बस्ह्र (का यह 25वां संस्करण, शिखर सम्मेलन की विरासत में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह 'ग्लोबल साउथ' (वैश्विक दक्षिण) में आधारित सतत विकास पर स्वतंत्र रूप से आयोजित होने वाला दुनिया का एकमात्र अंतरराष्ट्रीय मंच है।

स्वागत संबोधन देते हुए टेरी के अध्यक्ष, श्री नितिन देसाई ने कहा, 'आज दुनिया पूरी तरह बदल चुकी है। हमारे सामने चुनौती जागरूकता की नहीं, बल्कि कार्रवाई की है। विश्व सतत विकास शिखर सम्मेलन का पूरा सफर सिर्फ जागरूकता की बातें करने से हटकर अब इस बात की बेहतर समझ की ओर बढ़ा है कि स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए वास्तव में क्या किया जाना चाहिए। हमारे सामने सबसे गंभीर समस्या जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन की है। 'टेरी की महानिदेशक, डॉ. विभा धवन ने अपने थीम संबोधन में इस बात पर जोर दिया, 'पिछले 25 संस्करणों के दौरान, ह्लद्बस्ह्र वैश्विक दक्षिण के लिए जलवायु परिवर्तन और सतत विकास पर विमर्श को दिशा देने वाला एकमात्र स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय मंच बन गया है। हम चर्चाएं तो बहुत कर चुके हैं, लेकिन आज हमें भारत और वैश्विक, दोनों स्तरों पर ठोस कार्रवाई की जरूरत है। '

सत्र के समापन से पहले, डॉ. धवन ने भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा साझा किया गया एक विशेष संदेश पढ़कर सुनाया। प्रधानमंत्री ने अपने संदेश में कहाः

'हमारा दृष्टिकोण 'अंत्योदय' से प्रेरित है, जिसका अर्थ है सबसे वंचित व्यक्ति का उत्थान। जलवायु कार्रवाई को सबसे पहले कमजोर, गरीब और वंचित वर्ग की रक्षा करनी चाहिए। ग्लोबल साउथ जलवायु परिवर्तन का असमान रूप से बहुत अधिक भार वहन करता है, फिर भी उनके लिए

विकास अनिवार्य है। इसलिए 'जलवायु न्याय' अत्यंत आवश्यक है। विकासशील देशों को पृथ्वी की रक्षा करते हुए गरीबी और भूख का उन्मूलन करना होगा, जिसके लिए प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, वित्तीय विकल्प और साझेदारियां बहुत जरूरी हैं।विकसित देशों की यह विशेष जिम्मेदारी है कि वे तेजी से आगे बढ़ें, सतत जीवनशैली अपनाएं और बड़े पैमाने पर वित्त व तकनीक उपलब्ध कराएं। मुझे उम्मीद है कि यह सम्मेलन संकल्पों को मजबूत करेगा, सहयोग को गहरा करेगा और हमारे ग्रह के लिए एक सतत भविष्य सुनिश्चित करेगा। WSDS के रजत जयंती संस्करण में सार्थक विचार-विमर्श के लिए मेरी ढेरों शुभकामनाएं। '

विशेष संबोधन में, टाटा ट्रस्ट्स के सीईओ, श्री सिद्धार्थ शर्मा ने जोर देते हुए कहा, 'यह कार्रवाई का समय है। यह बेहद महत्वपूर्ण है कि हम जलवायु परिवर्तन की भाषा का लोकतंत्रीकरण करें। इसे केवल सम्मेलनों, बैठक कक्षों या बोर्डरूम की चर्चाओं तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि इसे आम जनमानस तक पहुँचना होगा। लोगों को यह समझना होगा कि यह उन पर कैसे प्रभाव डालता है। इसके बाद हमें ऐसे समाधानों पर काम करना होगा जो स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल हों, और जिनमें अनुकूलन को भी उतना ही महत्व दिया जाए जितना हम शमन को देते हैं। 'मंत्रालयी उद्घाटनः विजन-आधारित जलवायु नेतृत्व का आह्वानइस शिखर सम्मेलन का औपचारिक उद्घाटन भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री, माननीय श्री भूपेंद्र यादव द्वारा किया गया। अपने मुख्य संबोधन में, मंत्री ने समानता, लचीलापन और सतत विकास पर टिकी जलवायु महत्वाकांक्षा के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दोहराया।

WSDS (WSDS) के ग्लोबल साउथ से उभरकर एक ऐसे विशिष्ट मंच बनने पर, जो सरकारों, उद्योग जगत, शिक्षाविदों, नागरिक समाज और समुदायों को एक साथ लाता है ताकि 'स्थिरता के विज्ञान' को नीतियों, साझेदारियों और धरातल पर व्यावहारिक कार्रवाई में बदला जा सके, श्री यादव ने कहा, 'आज का दिन केवल एक विरासत का उत्सव नहीं है, बल्कि यह मानवता और इस ग्रह के लिए एक निर्णायक क्षण है। इस शिखर सम्मेलन की मुख्य थीम – ट्रांसफॉर्मेशन्सः विजन, वॉयस और वैल्यूज फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट – एक रणनीतिक जरूरत है। लेकिन नेतृत्व के लिए धैर्य और दृष्टि दोनों की आवश्यकता होती है। शिखर सम्मेलन में रेखांकित 'परिवर्तन का सिद्धांत' – कंस्ट्रक्टिविज्म, लर्निंग, ट्रांसफॉर्मेशन – हमें याद दिलाता है कि मानक और नियम संवाद के माध्यम से विकसित होते हैं।लेकिन अगले 25 वर्ष केवल क्रियान्वयन के होने चाहिए। हमें आगे बढ़ना होगाः प्रतिज्ञाओं से प्रदर्शन की ओर; लक्ष्यों से प्रगति-पथ की ओर; और महत्वाकांक्षा से जवाबदेही की ओर। इस सम्मेलन को उस आयोजन के रूप में याद किया जाए जहाँ: विजन व्यावहारिक बना, आवाजें समावेशी हुईं और मूल्य संस्थागत बने। 'परिवर्तन' केवल एक विषय बनकर न रह जाए, बल्कि इसे एक वैश्विक आंदोलन बनने दें। '

उद्घाटन संबोधन में, कोऑपरेटिव रिपब्लिक ऑफ गुयाना के उपराष्ट्रपति, महामहिम डॉ. भर्रत जगदेव ने कहा, 'जब यह शिखर सम्मेलन पच्चीस साल पहले शुरू हुआ था, तब सारा ध्यान जलवायु और स्थिरता से जुड़े मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने पर था। आज चुनौती जागरूकता की नहीं, बल्कि अपने लक्ष्यों को पाने के लिए ठोस कार्रवाई और उच्च महत्वाकांक्षा की है। ऐसे समय में जब बड़ी अर्थव्यवस्थाएं पीछे हट रही हैं, जलवायु लक्ष्यों को हासिल करना–विशेष रूप से कार्बन मूल्य निर्धारण, बहुपक्षीय व्यवस्थाओं और विमानन व नौवहन जैसे क्षेत्रों में–कहीं अधिक कठिन हो जाता है।इसके बावजूद, मजबूत राष्ट्रीय नेतृत्व प्रगति को आगे बढ़ा सकता है। गुयाना में, हमारी 2009 की लो-कार्बन डेवलपमेंट स्ट्रैटेजी ने यह साबित किया है कि मौजूदा वनों को बचाए रखना उच्च गुणवत्ता वाला और किफायती समाधान प्रदान करता है। हमने तेल संसाधनों का जिम्मेदारी से विकास करने के साथ-साथ, स्वैच्छिक और अनुपालन बाजारों में करोड़ों डॉलर मूल्य के 'फॉरेस्ट कार्बन क्रेडिट' बेचे हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि सस्टेनेबिलिटी वास्तविक आर्थिक मूल्य प्रदान करती है।'

चिरंजीव राव की कृति का विमोचन और डॉ. मौना कौशिक का सम्मान

प्रवासी भारतीय हिंदी भाषा व संस्कृति के ध्वज वाहक हैं- न्यायमूर्ति चंद्रभूषण वाजपेई

रायगढ़ ।डॉ. मीनकेतन प्रधान पूर्व प्राध्यापक किरोड़ीमल शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय रायगढ़, संस्थापक विश्व हिन्दी अधिष्ठान द्वारा प्रकाशित आंध्रप्रदेश के साहित्यकार चिरंजीव राव की सद्यः प्रकाशित काव्य कृति ' बाग - जलियाँवाला ' का विमोचन तथा वरिष्ठ प्रवासी हिन्दी साहित्यकार डॉ.

डॉ. मौना कौशिक -सोफिया यूनिवर्सिटी बल्गारिया का सम्मान बिलासपुर के प्रयास प्रकाशन - संस्कार भवन में दिनांक 25 /2/26 को मुख्य अतिथि - न्यायमूर्ति डॉ. चंद्रभूषण वाजपेयी के मुख्य आतिथ्य , डॉ. श्यामलाल निराला -प्राचार्य जे.पी. वर्मा शासकीय महाविद्यालय बिलासपुर , हिन्दी छत्तीसगढ़ी कथाकार डॉ. विनोद कुमार वर्मा के विशिष्ट आतिथ्य तथा डॉ. मीनकेतन प्रधान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।प्रथम चरण के कार्यक्रम का आरंभ

डॉ. विद्या प्रधान , पंकज शर्मा - संयोजक विश्व हिंदी अधिष्ठान-रायगढ़, डॉ. ज्ञानेश्वरी सिंह-महासचिव भाषा सहोदरी हिंदी समिति-दिल्ली, देवम् फाउंडेशन सोफिया-बुल्गारिया, डॉ. राघवेंद्र दुबे - अध्यक्ष प्रयास प्रकाशन साहित्य अकादमी एवं अंजनी तिवारी सुधाकर -अध्यक्ष राष्ट्रीय कवि संगम-बिलासपुर के संयुक्त तत्वावधान अतिथियों द्वारा सरस्वती प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन तथा रामनिहोरा राजपूत की सरस्वती वंदना से हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि -न्यायमूर्ति डॉ.चंद्रभूषण वाजपेई , पूर्व कुलपति - हिदायतुल्ला नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी रायपुर ने अपने उद्बोधन में डॉ. मौना कौशिक के प्रदेय की सराहना करते हुए उनके कार्यों को वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा,साहित्य और सांस्कृतिक विकास की दिशा में महत्त्वपूर्ण बताया । उन्होंने आज के संदर्भ में हिंदी भाषा की वैश्विक पहचान बनाने में प्रवासी भारतीयों के योगदान का भी उल्लेख करते हुए साहित्य के माध्यम से अपने इतिहास के महत्त्व पूर्ण पन्नों को देश के युवा नागरिकों के समक्ष रखना राष्ट्रीय कर्तव्य बताया। इसी तारतम्य में न्यायमूर्ति वाजपेयी ने 'बाग जलियांवाला ' के

काव्य कृतिकार चिरंजीव राव की रचनात्मकता को भारतीय स्वाधीनता संघर्ष की कारुणिक गाथा बताते हुए राष्ट्र प्रेम की भावना को विकसित करने का महती उद्देश्य निरूपित किया ।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. श्याम लाल निराला- प्राचार्य जे पी वर्मा महाविद्यालय बिलासपुर ने आंध्रप्रदेश के रचनाकार चिरंजीव

राव की रचना को राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत कहा तथा डॉ. मौना कौशिक के साहित्यिक योगदान को हिन्दी के विकास-विस्तार में सफल प्रयास बताया।

डॉ. निराला ने इस आयोजन को बिलासपुर साहित्यधानी में निरंतर चलने वाले साहित्यिक अनुष्ठानों की महत्त्वपूर्ण कड़ी बताया ।

विशिष्ट अतिथि डॉ . विनोद कुमार वर्मा -लाला जगदलपुरी सम्मान से सम्मानित साहित्यकार

ने पुस्तक विमोचन और सम्मान उपक्रम को सार्थक बताते हुए संदर्भगत नारी शक्ति की प्रेरक सत्य कथा पर आधारित अपनी बहुप्रशंसित कहानी 'मछुआरे की लड़की ' की अन्तर्वेदना को उजागर किया। उन्होने डॉ.मौना कौशिक के हिंदी साहित्य के वैश्विक

उन्नयन में दिए जा रहे योगदान की सराहना की । जिस पर कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. मीनकेतन प्रधान ने विदेशी भाषाओं में भी ' मछुआरे की लड़की ' कहानी के अनुवाद को उपादेय कहा।इस अवसर पर उन्होंने अपने वक्तव्य में डॉ .मौना कौशिक द्वारा सोफिया विश्वविद्यालय बुल्गारिया में बल्गारियन साहित्य को हिंदी व हिंदी को बल्गारियन भाषा में अनुवाद के माध्यम से स्थापित किये जा रहे प्रयासों को हिन्दी की वैश्विक प्रतिष्ठा के लिए सार्थक बताया।उन्होंने अधिष्ठान द्वारा प्रकाशित चिरंजीव राव की कृति को प्रेरक सिद्ध किया ।

विश्व हिंदी अधिष्ठान रायगढ़ के वैश्विक समन्वयन में योगदान को प्रस्तुत करते हुए प्रयास प्रकाशन साहित्य अकादमी के संरक्षक डॉ .विनय कुमार पाठक के मार्गदर्शन, प्रोत्साहन के प्रति कृतज्ञता प्रकट किया। इस गरिमामय आयोजन में बुल्गारिया से आकर कार्यक्रम में सहभागी प्रवासी हिंदी भाषा विदुषी डॉ.मौना कौशिक ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी साहित्य व बल्गारियन कला -साहित्य के मध्य समन्वयन के साथ इसे अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर स्थापित करने की दिशा में वे क्रियाशील हैं । बल्गारियन छात्र हिंदी भाषा में स्नातक व परास्नातक कर रहे हैं। डॉ. कौशिक ने गोस्वामी तुलसीदास रचित हनुमान चालीसा का बल्गारियन व अंग्रेजी में लिप्यंतरण कर भारतीय साहित्य-संस्कृति को सर्वोच्च ऊँचाई दी है ।बल्गारिया के लोगों में इसे लोकप्रिय बनाने तथा इसकी आध्यात्मिक शक्ति के प्रति जागरूकता लाने का कार्य देवम् फाउंडेशन के माध्यम से किया जा रहा है।

उन्होंने 'बाग जलियांवाला ' काव्य कृति के विमोचन में सहभागिता के लिए हर्ष प्रकट करते हुए चिरंजीव राव को श्रेष्ठ साहित्यकार कहा।

इस क्रम में कृतिकार चिरंजीव राव ने अपनी काव्य कृति 'जलियाँवाला बाग ' की रचना को उस नृशंस हत्याकांड में मारे गए निर्दोष स्वतंत्रता आंदोलन के सत्याग्रहियों के प्रति श्रद्धांजलि बताया। इस गौरवशाली अवसर पर विश्व हिन्दी अधिष्ठान द्वारा प्रवासी भारतीय साहित्यकार डॉ .मौना कौशिक को हिंदी भाषा के वैश्विक विस्तार में योगदान के लिए तथा चिरंजीव राव को उत्कृष्ट साहित्य सेवा के लिए छत्तीसगढ़ के साहित्य पुरोधा व छायावाद के जनक पद्मश्री मुकुट धर पाण्डेय की स्मृति में सम्मान पत्र दे कर सम्मानित किया गया ।कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ .राघवेन्द्र दुबे ने किया। स्वागत संबोधन अंजनी कुमार तिवारी

'सुधाकर' द्वारा व आभार प्रदर्शन डॉ.श्रीमती विद्या प्रधान द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दूसरे चरण में समसामयिक काव्यगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें कवियों ने अपनी काव्य सासिक्त रचनाओं से श्रोता वर्ग को मंत्र मुग्ध कर दिया। रचनापाठ करने वाले रचनाकार - अंजनी कुमार तिवारी सुधाकर, डॉ . विवेक तिवारी,डॉ.शत्रुघ्न जेसवानी,राजेश कुमार सोनार, शीतल प्रसाद पाटनवार, राम निहोरा राजपूत, बालमुकुंद श्रीवास,श्रीमती कामना पाण्डेय,श्रीमती सुषमा पाठक,श्रीमती मीना दुबे,महेन्द्र दुबे,दीपक दुबे,पंकज शर्मा,डॉ.मौना कौशिक, डॉ.मीनकेतन प्रधान, चिरंजीव राव , डॉ .विनोद कुमार वर्मा,डॉ राघवेन्द्र कुमार दुबे।इस आयोजन की व्यापक सफलता के लिए,प्रो. आर. के. पटेल, डॉ बेठियार सिंह साहू,डॉ. राजेश दुबे, डॉ. ज्ञानेश्वरी सिंह, अमित सदावर्ती, वसंत पंडा, डॉ. सीमा प्रधान, बनवारी लाल देवांगन, हरिशंकर गौराहा, सौरभ सराफ, डॉ. करुणा पांडे,,मनीष पांडेय, युगल किशोर पंडा, लोचन गुप्ता , डॉ. एस . पी. गुप्ता तथा अन्य साहित्यकारों ने बधाई दी है ।